

---

# Shiva Stotram Vishnukritam

---

## शिवस्तोत्रम् विष्णुकृतम्

---

### Document Information

---

Text title : Shiva Stotram Vishnukritam

File name : shivastotramviShNukRRitaM.itx

Category : shiva, stotra

Location : doc\_shiva

Transliterated by : PSA Easwaran

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : From Saurapurana

Latest update : December 11, 2021

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

शिवस्तोत्रम् विष्णुकृतम्



(सौरपुराणे ३४-अध्यायान्तर्गतम्)

अधर्मबहुलं कृत्वा त्रिपुरं मुनिपुङ्गवाः ।  
महादेवमनुप्राप्य शरणं सर्वदेहिनाम् ॥ ५१ ॥  
तुष्टाव स्तोत्रवर्येण भगवन्तं सनातनम् ।  
दण्डवत्मणिपत्याह जले स्थित्वा समाहितः ॥ ५२ ॥  
नमः सर्वात्मने तुभ्यं शङ्करायार्तिहारिणे ।  
रुद्राय नीलकण्ठाय कद्रुद्राय प्रचेतसे ॥ ५३ ॥  
गतिस्त्वं सर्वदाऽस्माकं नान्यदेवारिमर्दन ।  
त्वमादिस्त्वमनादिस्त्वमनन्तश्चाक्षयः प्रभुः ॥ ५४ ॥  
प्रकृतिः पुरुषः साक्षाद्द्रष्टा हर्ता जगद्गुरुः ।  
त्राता नेता जगत्यस्मिद्भिद्भजादीन्दिजवत्सलः ॥ ५५ ॥  
वरदो वाङ्मयो वाच्यो वाच्यवाचकवर्जितः ।  
ध्येयो मुक्त्यर्थमीशानो योगिभिर्योगवित्तमैः ॥ ५६ ॥  
हृत्पुण्डरीकसुषिरे योगिनां संस्थितं सदा ।  
वदन्ति सूरयः सन्तं परब्रह्मस्वरूपिणम् ॥ ५७ ॥  
भवन्तं तत्त्वमित्याहुस्तेजोराशिं परात्परम् ।  
परमात्मानमित्याहुस्मिद्भ्रगति यद्विभो ॥ ५८ ॥  
दृष्टं श्रुतं स्थितं सर्वं जायमानं जगद्गुरो ।  
अणोरल्पतरं पाहुमहतोऽपि महत्तरम् ॥ ५९ ॥  
सर्वतःपाणिपादान्तं सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ॥  
महादेवमनिर्देश्यं सर्वज्ञं त्वामनामयम् ॥ ६० ॥

विश्वरूपं विरूपाक्षं सदाशिवमनुत्तमम् ।  
कोटिभास्करसङ्काशं कोटिशीतांशुसन्निभम् ॥ ६१ ॥  
कोटिकालाग्निसङ्काशं षड्विंशात्मकमीश्वरम् ।  
प्रवर्तकं जगत्यस्मिन्प्रकृतेः प्रपितामहम् ॥ ६२ ॥  
वदन्ति वरदं देवं सर्वावासं स्वयम्भुवम् ।  
श्रुतयः श्रुतिसारं त्वां श्रुतिसारविदश्च ये ॥ ६३ ॥  
अदृष्टमस्माभिरनेकमूर्ते द्विधा कृतं यद्भवता नु लोके ।  
तदेव दैत्यासुरभूसुराश्च देवासुराः स्थावरजङ्गन्माश्च ॥ ६४ ॥  
पाहि नान्या गतिः शम्भो विनिहत्यासुरान्क्षणात् ।  
मायया मोहिताः सर्वे दैत्यास्ते परमेश्वर ॥ ६५ ॥  
यथा तरङ्गाः शफरीसमूहा युध्यन्ति(?) चान्योन्यमपान्निधौ तु  
जडाश्रयादेव जडीकृताश्च सुरासुरास्तद्विजये हि सर्वे ॥ ६६ ॥  
इति सौरपुराणे चतुर्त्रिंशत्यध्यायान्तर्गतं विष्णुकृतं  
शिवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Shiva Stotram Vishnukritam*

pdf was typeset on September 16, 2023

——

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

